आजादी का अमृत महोत्सव

कविता संकलन

लहर लहर लहराये तिरंगा

उत्तर प्रदेश वस्त्र प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

कविता संकलन

समिति

- प्रो प्रशांत विश्नोई
- मुकेश कुमार सिंह
- श्री शिव गोविन्द प्रसाद
- श्री धर्मेंद्र नाथ पांडेय
- श्री तेज प्रताप सिंह

लेखन, संपादन

मुकेश कुमार सिंह

संरक्षक
प्रो (डा) गोविन्दन नलेन किल्ली
निदेशक

सम्पादकीय

आजादी का अमृत महोत्सव उत्तर प्रदेश वस्त्र प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में भी सम्पूर्ण भारत वर्ष की भांति पूर्ण उत्साह और जोश के साथ मनाया जा रहा है ए अमृत काल वह समयावधि होती है जिसमें ईश्वरीय कृपा से अमृत वर्षा होती है जिसके परिणाम स्वरुप वो व्यक्तिए संस्थाए अथवा देश अपने अनुभवों की दृष्टि से परिपक्व हो जाता है ए हमारे देश के विषय में भी ये कथन आज पूर्ण सत्य प्रतीत होता है क्योंकि भारत का लोकतंत्र आज सम्पूर्ण विश्व का सर्वाधिक बड़ा लोकतंत्र है जिसमें सबसे अधिक मतदाता अपने वोट के माध्यम से अपनक सरकार चुनते है

भारत देश को इस स्थिति में लेन के लिए जिन सपूतों ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया उनका पूर्ण सम्मान के साथ स्मरण करना पुरे राष्ट्र का परम कर्त्यव है, देश को स्वतंत्र करने के लिए नरम दल और गरम दल दोनों ही विचार धाराओं के लोगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा , एक ओर नरम दल के स्वाधीनता सेनानी आंदोलन और सत्याग्रह के माध्यम से ब्रिटिश सरकार का विरोध करते थे तो गरम दल की विचार धारा के भारत मां के सपूत ताकत का जबाब ताकत से देने में विश्वास करते थे

इस सबसे अलग साहित्य क्षेत्र के लोग भी अपने माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन को गति प्रदान कर रहे थे , रामधारी सिंह दिनकर, श्याम नारायण पांडेय , शुभद्रा कुमारी चौहान अपनी वीर रास की कविताओं के माध्यम से युवाओं में देशभक्ति का संचार करते थे, राष्ट्रीयता की भावना को द्रण करते थे , उन्हीं कविताओं के माध्यम से नारे गड़े जाते थे जप जनमानस को आल्हादित करते थे , इसलिए आजादी के आंदोलन में साहित्य के सिपाहियों का योगदान भी उल्लेखनीय रहा है आज हम सभी कविताओं के माध्यम से अपने अमर शहीदों के प्रति अपने कृतज्ञता ज्ञापित कर रहे है तो देश की उपलब्धियों का गुणगान करके नित्य प्रति प्रगति पथ पर अग्रसर होने को वचन बद्ध भी हो रहे हैं

इस कविता संग्रह में छात्र छात्रों पूर्व छात्रों, तथा सभी कर्मचारी बन्धन द्वारा योगदान दिया गया है वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं मुझे आशा है की एक बार आप इसे अवश्य पढ़कर अपनी राष्ट्र भक्ति का परिचय देंगे और भारत को गौरवन्त्वित करने में अपना योगदान देंगे

जय हिन्द

मुकेश कुमार सिंह
संपादक

भारत माता का गीत

भारत माता का गीत लिखूँ
इस मॉं की अनुपम प्रीति लिखूँ

गंगा जल पान कराती है
मधुरम फल हमें खिलाती है
जो विंध्य धौलगिरि बीच पड़ा
वो झूला हमें झुलाती है
भीषण गर्मी को पस्त करे
हिमगिरि की ऐसी शीत लिखूँ
भारत माता का गीत लिखूँ
इस मॉं की अनुपम प्रीति लिखूँ

जिसने हमको धन धान दिया
निज सुत होने का मान दिया
जग ने जब शून्य नहीं जाना
इसके बेटों ने ज्ञान दिया
हर ओर कपट का तम हो जब
निष्ठा की छल पर जीत लिखूँ
भारत माता का गीत लिखूँ
इस मॉं की अनुपम प्रीति लिखूँ

खनिजों से मालामाल किया
सागर नदिया और ताल दिया
करके विषःपान प्रदूषण का
शुरभित फूलों का थाल दिया
अब तक तो जननी कहा जिसे
मन है अब उसको मीत लिखूँ

भारत माता का गीत लिखूँ
इस मॉं की अनुपम प्रीति लिखूँ

गिरिराज हिमालय प्रहरी है
जिसकी समीर में लहरी है
ऊँचाई चूम रही अम्बर
लेकिन घाटी भी गहरी है
केसर की क्यारी में गूँजा
उसको चकरी संगीत लिखूँ
भारत माता का गीत लिखूँ
इस मॉं की अनुपम प्रीति लिखूँ

आगे बढ़कर अपनाया है
सबको निज हिये लगाया है
कोई उद्दंड हुआ सुत तो
धीरज धर धर समझाया है
हर रंग यहाँ चढ़ता बढ़ता
वो रंग बिरंगी नीति लिखूँ
भारत माता का गीत लिखूँ
इस मॉं की अनुपम प्रीति लिखूँ

डा मुकेश कुमार सिंह
यूपीटीटीआई कानपुर

भारत का गौरवगान

भारत के आज़ादी की,

गाथा मैं, सबको सुनाऊं ।
देशप्रेम के मधुर गीत,
कलध्वनि में गुनगुनाऊं ।

पंथ, द्रव्य संग कर्म मोक्ष केय
जीवन में सामंजस्य बनाऊं।
भारत मां की चरणों में रहकर,
एकत्व भावना की अलख जलाऊं।

गीता का ज्ञान सुनूं मैं,
और पढूं मैं रामायण।
करूं बाइबल और कुरान का विद्याम्यास
संग गुरु ग्रंथ का पारायण ।

उदारता का पाठ पढ़ाकर,
धर्म मजहब का भेद मिटाऊं।
पूर्ण शौर्य दिखलाकर अपना
मैं, अपना कर्तव्य निभाऊं।

इस अमृत पर्व का गौरवगान,

भारतवर्ष मेंए मैं फैलाऊं।
हृदय में उत्साह भर कर,
जय हिंद के नारे लगाऊं।

गोतीता

अभिनन्दन

अभिनन्दन है अभिनन्दन है
करबद्ध सबकाअभिनन्दन है
हर भारतवासी के दिल में
इक सत्कार भरा संवेदन है
अभिनन्दन है अभिनन्दन है

तुम रुके नहीं तुम झुके नहीं
ना सम्मान देश का झुकने दिया
सब वीरों की तीव्र प्रतिक्रिया को
पल भर के लिए ना रुकने दिया

हर भारतवासी की जुबान पर
यहाँ नाम तुम्हारा आया है

तुम जैसे वीरों के बल पर ही तो
यह   आज़ाद तिरंगा लहराया है

मेरी मातृभूमि के वीर जवान,
सदा हो जय जय कार तुम्हारी,
कैसा भी दुश्मन सामने आया ,
रही निडर सी शान तुम्हारी,

हंस हंस कर देश की सीमा पर
हम सबकी रक्षा करते हो तुम
देश सेवा ही अस्माकंम धर्मम
तीव्र चौकस तुम रहते हो हरदम

इस देश का बच्चा बच्चा
ले नाम आपका यह कहता है
कठिन समय में भी सैनिक का
मन कमल सा खिला रहता है

हर सच्चे देश के नागरिक को
तुमसे है सच्चा प्रेम का बंधन
तुम जैसे वीर जवान ही तो
भारत माँ के दिल की धड़कन

मन करता है इस वीर के सीने पर
विजयी स्वर्ण पदक शोभित कर दूँ
इन वतन के वीर रखवाले पर
मैं अपना सर्वस्य अर्पण कर दूँ

जय प्रकाश भाटिया

शहीद शिवराम हरि राजगुरू

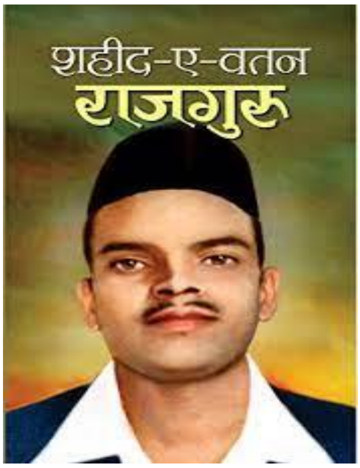

है सम्मान शहीदों का तो दिखना बहुत जरूरी है।
राजगुरू की अमर शहादत लिखना बहुत जरूरी है

फूलों जैसी राह नहीं थी पग–पग पर अंगारे थे
छह वर्ष का अल्प आयु में पिता स्वर्ग सिधारे थे

हिम्मत करके राजगुरू जी काशी नगर पधारे थे
वेद पुराणों संग कौमुदी कथा मस्तिष्क उतारे थे

योग और व्यायाम संग ना आलस कभी भुलाते थे
वीर शिवाजी की गाथायें ये हर रोज सुनाते थे

मिले इन्हें आजाद चले जब ये पथरीली राहों पर
मरहम जैसे रखे सदा अंगारे अपने घावों पर

था बिल्कुल अचूक निशाना चूक कहॉ से होनी थी
साण्डर्स के भेजा को ऐसी मारी गोली थी

उसने अपनी गुल्लक में से एक अशर्फी खोई थी
राजगुरू की फॉसी पर तो भारत माता रोई थी

डा मुकेश कुमार सिंह
यूपीटीटीआई कानपुर

<u>शहीद भगत सिंह</u>

याद करें हम भगत सिंह की वो निश्छल कुर्बानी थी
जिसका मोल नहीं हो सकता वो अनमोल जवानी थी

जो विद्यावती माता की ऑखों का एक तारा था
जो सरदार किशन सिंह की बगिया का रखवारा था

जालियॉवाला काण्ड हुआ तो बालक मन भी टूट गया
छोड़ पढ़ाई कालेज वाली बॉका रण में कूद गया

चौरी–चौरा के किसान को जब बापू ने नहीं सुना
शान्ति पहल को भगत सिंह ने अपनी खातिर नहीं चुना

हाथ जोड़ कर खड़े रहे हो निश्चित है फिर बरबादी
संघर्षों के बिना कहॉ मिलने वाली है आजादी

जब बिस्मिल ने फॉसी चूमी तो फिर बांका दौड़ गया
जैसे मरूस्थल में पानी का एक सरोवर खौल गया

जब शेखर ने भगत को देखा उनका सीना फूल गया
जलियॉवाला बाग की घटना दिल में जैसे शूल गया

राजगुरू के साथ भगत   को ये संघर्ष गवारा था
एक कुत्ते की मौत आपने सान्डर्स को मारा था

लाला जी की मृत्यु देखकर   भारत माता रोई थी
जाग गयी अनमोल जवानी अब तक तो जो सोई थी
जय गोपाल आजाद राजगुरू तीनों का जब साथ मिला
हत्यारे साण्डर्स ब्रिटिश   को गोली का परसाद मिला

जो बहरी   सरकार हुई थी उसको इन्हें जगाया था
बटुकेश्वर के साथ भगत को बम बिस्फोट कराना था

बढ़कर चुना जेल का रास्ता भागना था मंजूर नहीं
इन्कलाब का नारा बोला   फॉसी तख्ता दूर नहीं

मातृ भूमि की खातिर सिंह ने फॉसी फंदा चूम लिया

अगर हो गया वो बलिदानी चाहे हमसे दूर गया

डा मुकेश कुमार सिंह
यूपीटीटीआई कानपुर

दोहे

स्वाभिमान ये नहीं मिटेगा   बस चूरा हो सकता है
भगत सिंह के बिना महोत्सव क्या पूरा हो सकता है।

बचपन से दुर्भाग्य ने   पकड़ रखा था साथ
छह की छोटी आयु में   ये हरि हुआ अनाथ

गॉव खिड़ा पूना जिला   गया सुमंगल छाय
भादों   कृष्णा त्रयोदशि   राजगुरू गय आय

डा मुकेश कुमार सिंह
यूपीटीटीआई कानपुर

जयति जय मॉ भारती

जयति जय जय जयति जय जय जयति जय मॉ भारती
तेरा नित पूजन करूॅ मैं और करूॅ मैं आरती
जयति जय जय जयति जय जय जयति जय मॉ भारती

तेरी इस पवन धरा से अन्नजल मुझको मिला
तेरी बगिया में सुगंधित फूल सा में भी खिला
दुनियॉदारी की बदौलत भेद कुछ जब भी हुए
तेरी गोदी जब भी आया मिट गया हर एक गिला
जो भी तेरे पास है मॉ सब कुछ हम पर बारती
जयति जय जय जयति जय जय जयति जय मॉ भारती

ये हिमालय उत्तरी दिश सीना ताने है खड़ा
दक्षिणी दिश में जलधि तेरे ही चरणों में पड़ा
कच्छ भुज लगता है ऐसे जैसे हों दायीं भुजा
और अरूणाचल में अपना ही तिरंगा है गड़ा
ये मिजोरम ही रहा मॉ तेरे रथ का सारथी
जयति जय जय जयति जय जय जयति जय मॉ भारती

इस जमीं से आसमॉ तक धूम तेरी हो रही
देखकर यश कीर्ति तेरी अरि की सेवा रो रही
कर रहे संधान अब मंगल पे जाने का हमीं
शोध शक्ती अब प्रगति के बीज नित नित बो रही
चल रही मॉ तू युगों से तू कभो ना हारती
जयति जय जय जयति जय जय जयति जय मॉ भारती

डा मुकेश कुमार सिंह
यूपीटीटीआई कानपुर

लहराये तिरंगा लहर लहर

लहराये तिरंगा लहर लहर
हर गली गली हर डगर डगर

पेड़ों की हर हर टहनी है
खेतों में भर भर बाली है
क्या इसका गौरव रहन करें
इसकी तो शान निराली है।
इसका प्रताप दिन रात दिखे
हर गॉव गॉव हर शहर शहर
लहराये तिरंगा लहर लहर

इससे ही जीवित हर नल है
इससे ही खेतों में हल है
प्रेरित किसान दिन भर करता
इससे ही मेहनत का फल है
जल में भी इसका जलवा है
नदिया नदिया हर नहर नहर

लहराये तिरंगा लहर लहर

बिस्मिल शेखर का प्यारा था
अशफाक ने जिसे संवारा था
घायल सीना और कटे हाथ
फिर भी ना इसे झुकाया था
इसकी छवि नित नित बसती है
दृष्टि दृष्टि और नजर नजर
लहराये तिरंगा लहर लहर

अमृत उत्सव का मौका है
अब रहा न कोई धोखा है
कुत्सित प्रयास ले बढ़ा अगर
उसको बढ़ करके रोका है
गर क्षण लिया इसके कुछ भी
चलती ना कोई अगर मगर
लहराये तिरंगा लहर लहर

डा मुकेश कुमार सिंह
यूपीटीटीआई कानपुर

भारत आजाद नहीं होता

उनका अस्तित्व ना होता तो भारत आजाद नहीं होता
यह अमर तिरंगा भी जग में फिर जिंदाबाद नहीं होता
बलिदान किया जीवन अपना उनका एहसान वतन पर है
जो है शहीद इस धरती के अब उनका नाम गगन पर है ।

वह वीर ना होते तो हम गैरों के रहमों पर जिंदा होते
वह जान न देते तो हम अपनी बहन . बेटियों को खो देते
दुनिया में अपने गौरव का संगीत नहीं हो सकता था
और लाल किले में जन.गण.मन का गीत नहीं हो सकता था ।

अपनी भाषा भी छिन जाती होठों से हिंदी छिन जाती
इस भारत माता के कंगन माथे की बिंदिया छिन जाती
उनकी कुर्बानी ने गंगा गीता का मान बढ़ाया है
उनकी कुर्बानी ने ही अपना हिंदुस्तान बचाया है ।

यह उनकी मेहनत का फल है ए जो आज निखर चमन पर है
जो है शहीद इस धरती के अब उनका नाम गगन पर है ।

आजाद भगत सिंह शेखर है और लक्ष्मीबाई रानी है
जब तक नभ में चंदा सूरज उन सब की अमर कहानी है
अपमान हो उनका भारत में हम तो स्वीकार नहीं सकते
कुर्बानी देने वालों का हम कर्ज उतार नहीं सकते ।

आजादी अपने दिल दिमाग और अपने तन पर है
जो है शहीद इस धरती के अब उनका नाम गगन पर है ।

उनका अस्तित्व ना होता तो भारत आजाद नहीं होता
यह अमर तिरंगा भी जग में फिर जिंदाबाद नहीं होता
बलिदान किया जीवन अपना उनका एहसान वतन पर है
जो है शहीद इस धरती के अब उनका नाम गगन पर है ।

तो आइए हम सब अपने शहीदों को याद करें उनकी श्रद्धांजलि के लिए,उनकी शांति के लिए उनकी

स्मृतियों को नाम पर घर में एक दीपक जरूर जलाएं बहुत बहुत धन्यवाद

जय हिंद जय भारत्

कमल साहू
टैक्सटाइल केमिस्ट्री ; 3 rd year)

तेरी ख़ुशबू की वो गंगा

यहाँ हर जग में गूँजी है तेरी ख़ुशबू की वो गंगा

जहां श्री राम की भूमि वहीं कुछ है यहां दरगाह,

ख़ुदा के नाम सौ है पर

दिल में एक हिंदुस्तान

न तुम भूलो की भागीरथ ने लाई थी यहां गंगा ।

न तुम भूलो की भागीरथ ने लाई थी यहां गंगा ।

मगर तुम आज पूछो की यहां होता है क्यों दंगा,

मुस्कुरा के मैं बोलूंगा बदल गया है हिंदुस्तान

मुस्कुरा के मैं बोलूंगा बदल गया है हिंदुस्तान

अगर कुछ आग हो दिल में तो बस तुम सिर झुका लेना,

अगर कुछ आग हो दिल में तो बस तुम सिर झुका लेना

नामी में बंद आंखों की खुशी में ये बता देना,

नामी में बंद आंखों की खुशी में ये बता देना,

लहू में आज भी सबके,

बहती है प्रेम गंगा

मगर ये सर कलम होगा तो तेरे नाम हिंदुस्तान ।

मगर ये सर कलम होगा तो तेरे नाम हिंदुस्तान

जहां दिख जाए वो दुश्मन,

वहां तुम सस्त्र उठा लेने,

अगर मिट जाऊ मैं लड़कर,

तो गोदी में जगह देना अंतिम सांस में मुझको,

माटी में दबा देना,

ख़ुदा के नाम सौ है पर दिल में एक हिंदुस्तान ।

ख़ुदा के नाम सौ है पर दिल में एक हिंदुस्तान ।

मत भूलो की अंग्रेजों को कैसे भगा दिया हमने,

मत भूलो की अंग्रेजों को कैसे भगा दिया हमने,

धोती पेहेन के लोहे का चना चबवा दिया हमने

धोती पेहेन के लोहे का चना चबवा दिया हमने

जो कहते थे कि हिंदुस्तान के टुकड़े वो कराएंगे

जो कहते थे कि हिंदुस्तान के टुकड़े वो कराएंगे

आज फिर **सर्जिकल** से अपनी खाला को बचाते हैं।

आज फिर **सर्जिकल** से अपनी खाला को बचाते हैं।

वहां वो पाक करता है,

काम नापाक ही सारे,

और नेपाल कहता है राम जन्मे है उनके द्वारे ।

भले कुछ बोलियां बदली

भले कुछ स्वाद है बदले

भले सौ धर्म है, सौ जाति भी,

और बोलियां भी है

मगर काटो जो नस को तो निकले एक हिंदुस्तान ।

ख़ुदा के नाम सौ है पर दिल में एक हिंदुस्तान

ख़ुदा के नाम सौ है पर दिल में एक हिंदुस्तान

Writer - Varun Dwivedi
(Batch 2018-2022)

कैसे पाए सच्ची आध्यात्मिक स्वतंत्रताः

संपूर्ण भारत में स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त को मनाया जाता है। सांसारिक अर्थ में स्वतंत्रता का मतलब होता है वह दिन जब एक देश किसी दूसरे देश के नियंत्रण से आजाद हुआ था, वहीं आध्यात्मिक अर्थ में स्वतंत्रता हमारी आत्मा की आजादी की ओर भी संकेत करता है।

अध्यात्म आनंदमय और शांतिपूर्ण जीवन को पाने का विज्ञान है। हमारे अंतर की गहराई में है हमारी आत्मा, जो कि प्रकाश, प्रेम और शांति से भरपूर है। हमारे ये आत्मिक खजाने मन, माया, और भ्रम की परतों के नीचे छुपे रहते हैं। हमारा ध्यान अंदरुनी संसार के बजाय हर वक्त बाहरी संसार में ही लगा रहता है। हम अपने मन की इच्छाओं के जरिए अपने ऊपर पड़े पर्दे बढ़ाते रहते हैं,

जिससे हमारे अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार में भी बढ़ोतरी होती चली जाती है। क्या इन बाधाओं को तोड़कर अपनी आत्मा को अनुभव करने का कोई तरीका है।

इसके लिए हमें धरती के चारों कोनों में तलाश करने की जरूरत नहीं है। सौभाग्य से, युगों, युगों से संत महापुरुष आत्मा के क्षेत्र में तरक्की करते रहे हैं। वे ऐसा करने में सफल रहे हैं। अपने ध्यान को अंतर में टिकाकरण जिसे मेडिटेशन, मौन प्रार्थना या अंतर्मुख होना भी कहा जाता है। वे हमें बताते हैं कि सच्ची आजादी हमें तभी मिलती है, जब हम

शांत अवस्था में बैठते हैं, अपनी आंखें बंद करते हैं और अपने ध्यान को अंतर में केंद्रित कर प्रभु की ज्योति का अनुभव प्राप्त करते हैं। यदि हम अपनी आत्मा को ढकने वाली परतों को हटाने में सफल हो जाएं, तो हम अपने सच्चे आत्मिक स्वरूप को अवश्य देख पाएंगे जोकि प्रभु की दिव्य.ज्योति से प्रकाशमान है।

जब हमारी आत्मा शरीर और मन की कैद से मुक्त हो जाती है, तो वो स्वतंत्र और खुश होकर ऊपर उठने लगती है। इस बाहरी संसार की समय और स्थान की सीमाओं से ऊपर उठकर वो अपने सच्चे अनंत अस्तित्व को पहचानने लगती है, और इस भौतिक मंडल से परे के आध्यात्मिक मंडलों की खुशियों और आनंद का अनुभव करने लगती है। यह आध्यात्मिक यात्रा आरंभ होती है आंतरिक प्रकाश को देखने और आंतरिक ध्वनि को सुनने के साथ। इनमें अधिक से अधिक डूबते जाने से हमारी आत्मा शारीरिक चेतनता से ऊपर उठ जाती है और धीरे. धीरे अंड, ब्रह्मांड और परब्रह्म के रूहानी मंडलों से गुजरते हुए अपने निजधाम सचखंड वापस पहुंच जाती है।

वहां हम अपनी आत्मा को उसकी निर्मल अवस्था में देख पाते हैं और अनुभव करते हैं कि वो परमात्मा का ही अंश है। वहां हमारी आत्मा फिर से अपने स्रोत परमात्मा में लीन हो जाती है और अंतहीन खुशियों, परमानंद और प्रेम से भरपूर हो जाती है। ऐसा करने के लिए हमें आंतरिक प्रकाश और

ध्वनि पर ध्यान केंद्रित करना होगा। हमारे भीतर आत्मा की अपार शक्ति और ऊर्जा मौजूद है। आत्मा के अंदर विवेक, निर्भयता, अमरता, अनंत प्रेम और परमानंद के महान गुण हैं। अपनी आत्मा और उसकी अनंत शक्ति के साथ जुड़कर हमारा संपूर्ण जीवन ही परिवर्तित और निखर जाता है। बाहरी स्वतंत्रता दिवस मनाने के साथ.साथ हमें आत्मिक स्वतंत्रता प्राप्त करने की भी कोशिश करनी

चाहिए। सच्ची स्वतंत्रता हालांकि आध्यात्मिक है और इसका मतलब है कि जो स्थायी हैए जो हमेशा मौजूद है

जो शाश्वत है, उसकी पहचान करना और उसका समर्थन करना। मैं केवल आध्यात्मिक क्षमता और शक्ति को प्राप्त कर सकता हूं और समझ सकता हूं जब मैं अपने जीवन की नींव उस पर रखूंगा जो हमेशा मौजूद है दृ यह गहरी आध्यात्मिक स्वतंत्रता का मार्ग है।

ॐ शांति

अरूण कुमार सिंह गंगवार,
एसोसिएट प्रोफेसर,
उत्तर प्रदेश वस्त्र प्रोदौगिकी संस्थान, कानपुर।

स्वतंत्रता और आध्यात्म।

आपको यह बात थोड़ी.सी ऊटपटांग सी लग सकती है कि कहाँ स्वतंत्रता और कहाँ आध्यात्मिकता। लेकिन मुझे लगता है कि यदि अध्यात्म के केन्द्र में कोई तत्त्व हो सकता है तो वह स्वतंत्रता ही है।

दुनिया में आजादी के लिए बहुत सारे आंदोलन हैं। स्वतंत्रता हम में से प्रत्येक की गहरी आवश्यकता है। सच्ची स्वतंत्रता हालांकि आध्यात्मिक है। इसका मतलब है कि जो स्थायीए शाश्वत है, उसकी पहचान करना और उसका समर्थन करना। मैं केवल आध्यात्मिक क्षमता और शक्ति को प्राप्त कर सकता हूं और समझ सकता हूं। जब मैं अपने जीवन की नींव उस पर रखूंगा जो हमेशा मौजूद है . यह गहरी आध्यात्मिक स्वतंत्रता का मार्ग है।

इस संसार में जो कुछ भी आज है वह कल के लिए मात्र और मात्र एक राख के ढेर से ज्यादा कुछ नहीं। अतः राख ही प्रत्येक वस्तु का सार है और इसी सार तत्व को भगवान शिव अपने शरीर पर धारण करते हैं। भगवान शिव की भस्म कहती है कि किसी भी वस्तु का अभिमान मत करो क्योंकि प्रत्येक वस्तु एक दिन मेरे समान ही राख बन जाने वाली है। अगर मैं इस दुनिया में किसी भी अस्थायी चीज को पकड़ कर रखता हूं, तो जिस पर मैं निर्भर हूंए वह अंततः मुझे किसी न किसी रूप में दुख और दुख का कारण बनेगी।

स्वतंत्रता बहुत खूबसूरत, प्यारा और अद्भुत शक्ति से भरा हुआ शब्द है। सामान्य तौर पर हम सब स्वतंत्रता का राजनैतिक अर्थ ही लगाते हैं। और देश की आजादी के रूप में इसका उपयोग करते हैं। लेकिन मुझे यह शक्तिशाली शब्द हमारे जीवन के केन्द्र का सबसे क्रांतिकारी और सबसे प्रेरक शब्द लगता है। इतना सक्रिय और गतिशील शब्द कि इसमें धर्म और अध्यात्म की झलक मिलने लगती है। स्वतंत्रता का अर्थ है स्व का तंत्र यानी कि मेरी अपनी प्रणाली मेरा अपना तरीका। इसी को गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने इस रूप में कहा है कि दूसरे के धर्म का पालन करने से बेहतर है स्वधर्म का पालन करते हुए नष्ट हो जाना।

यह स्वधर्म ही तो स्व का तंत्र है। गीता में कृष्ण का धर्म हिन्दू मुसलमान ईसाई का नहीं है बल्कि यह

प्रकृति का वह धर्म है एजो प्रकृति ने अपनी हर एक रचना को दिया हुआ है और प्रकृति की जितनी भी रचनाएं हैं सभी एक.दूसरे से भिन्न हैं। यहाँ तक कि यदि आप एक ही पेड़ के दो फल एक ही समय में तोड़कर बारी.बारी से खायें तो उनके भी स्वाद में आपको फर्क महसूस हो जाएगा क्योंकि इन दोनों ही फलों का तंत्र अलग.अलग हैए भले ही उनको रस पहुँचाने वाली जड़ें एक ही हैं और भले ही उन जड़ों को रस देने वाली ज़मीन भी एक ही है। यहीं पर बात आती है स्वतंत्रता और अध्यात्म की। अध्यात्म का प्रथम चरण यह है कि हर कोई यह चाहता है कि मैं अपनी प्रणाली के अनुसार

काम करूँ। लेकिन विडम्बना यह है कि दूसरा भी अपनी प्रणाली के अनुसार काम करे यह कोई नहीं चाहता। दूसरों से हम उम्मीद करते हैं कि उसकी प्रणाली हमारे अनुसार हो। वह काम हमारे तरीके से करे और जैसे ही उससे हम यह अपेक्षा करने लगते हैं वैसे ही हमारी यह अपेक्षा धीरे–धीरे उसकी स्वतंत्रता का अपहरण करने लगती है। हम उस पर स्वंय को लादने लगते हैं। उसके तंत्र को कुचलना शुरू कर देते हैं, यानी कि हम उसके स्वधर्म को नष्ट कर देते हैं लेकिन मजेदार बात यह है कि ऐसा करके हम केवल उसके ही स्वधर्म को नष्ट नहीं करते बल्कि स्व के धर्म को भी नष्ट करते हैं। आपने यह जरूर महसूस किया होगा कि जब भी हम किसी दूसरे की स्वतंत्रता का अपहरण करते हैं तो इस अपहरण करने की प्रक्रिया में कहीं.न.कहीं हम खुद की भी स्वतंत्रता का समर्पण करते हैं। छोटी.सी ही बात को ले लें और इस पर थोड़ी देर के लिए विचार करें। ज्यादातर घरों में महिला सेविका आती है। यह महिला सेविका इसलिए रखते हैं ताकि हम अपने घर के कामकाज से फ्री होकर उस समय का इस्तेमाल अपनी मनपसन्द के किसी और काम के लिए कर सकें, लेकिन क्या आपने कभी इस बात का लेखा–जोखा लिया है कि सचमुच में ऐसा हो पा रहा है या नहीं। कहीं ऐसा तो नहीं कि उस महिला सेविका को रोजाना निर्देश देने में उसका इंतजार करने में और उसकी देखभाल करने की प्रक्रिया में हम स्वयं ही उसके सर्वेन्ट बन गये हैं।

हथकड़ी तो हथकड़ी ही होती है फिर चाहे वह सोने की ही बनी हुई क्यों न हो। सर्वेन्ट तो सर्वेन्ट ही होता है फिर चाहे वह महिला सेविका हो या लार्डसर्वेन्ट। इससे क्या फर्क पड़ता है। इसलिए अध्यात्म की शुरूआत ही स्वतंत्रता के इस बिन्दु से होती है कि दूसरों को स्वतंत्र करो ताकि तुम खुद स्वतंत्र हो सको। अध्यात्म का दूसरा चरण यह है कि तुम स्वयं स्वतंत्र हो ताकि दूसरा कोई तुम्हें गुलाम न बना सके। इस स्वतंत्र होवो का सम्बन्ध मानसिक विचारों की स्वतंत्रता से है। इसका सम्बन्ध इस बात से है कि छोटापन छोड़ो। छोटे कमरे में घुटन होती है। छोटे कपड़े पहनने से कसमसाहट बढ़ती है। जहाँ भी छोटापन होगा। वहाँ परेशानी होगी। जहाँ छोटे विचार होंगेए वहाँ घुटन होगी। जहाँ घुटन होगी वहाँ स्व का तंत्र काम कर ही नहीं सकता। तो ओछापन छोड़ो ताकि विचार स्वतंत्र हो सकें। लगने दो अपने विचारों में बड़ेपन के पंख ताकि वह हमारे घरएनगरएसंस्थान और यहाँ तक कि हमारे देश और दुनिया को छोड़कर ब्रह्माण्ड की

खुलेआम सैर कर सके। तोड़ो दिमाग की इस तिहाड़ जेल को ताकि हमारी चेतना उन्मुक्त होकर ब्रह्माण्ड की चेतना से सम्पर्क करने लायक बन सके। स्वतंत्रता का तीसरा चरण है अध्यात्म की स्वतंत्रता। जब हम दूसरे चरण को पा लेते हैं तब आत्मा की शक्ति जागृत होती है मतलब आत्मा का इतना उन्मुक्त हो जाना कि उसमें जगह तो थोड़ी.सी ही दिखाई देती है लेकिन वह होती बहुत ज्यादा है। कम्प्युटर की एक

छोटी.सी चिप में कितनी मेमोरी आ जाती है, आप जानते हैं। इसी तरह जब हमारी आत्मा उन्मुक्त हो जाती है तो उसमें पूरे ब्रह्माण्ड के लिए जगह बननी शुरू हो जाती है और जब ऐसा होने लगता है उसी क्षण मोक्ष की प्रक्रिया के साथ हम मुक्त हो जाते हैं मुक्ति का अर्थ भी स्वतंत्रता ही है।

ॐ शांति

अरूण कुमार सिंह गंगवार,

एसोसिएट प्रोफेसर,

उत्तर प्रदेश वस्त्र प्रोद्योगिकी संस्थान, कानपुर।

भारतीय जवान, देश की शान

मॉ-बाप, परिवार और अपना शहर छोड़कर,
वो अपने घरों से मीलों दूर चले जाया करते हैं |
न जाने कितनी मुश्किलें आती होगी राहों मे उनकी,
फिर भी वो हँसकर अपने फर्ज को निभाया करते हैं |
अपने परिवार को भुलाकर, देश को ही अपना बताया करते हैं |
और मौत से बैखोफ होकर, वो सरहद पर अपना घर बसाया करते हैं |
ये भारतीय जवान है जो दुश्मनों के दिल दहलाया करते हैं |

गर्मी सर्दी और बरसात की चिंता ,न वो कभी एक दफा भी करते हैं |
जो ठान ले वो अगर उसे, मरते दम तक पूरा कर जाया करते हैं |
चाहे जो भी हालात हो, वो कभी न कोई भी गम जताया करते हैं |
और दुश्मनों के सामने भी वो कभी अपने सर को न झुकाया करते हैं |
ये भारतीय जवान हैं जो शान से उनके सीने पर गोली चलाया करते हैं |

दुश्मनों से बैखोफ हम लोग, चैन से अपने घरों में सो जाया करते हैं |
जान हथेली पर रखकर अपनी, वो हर जंग अकेले लड़ जाया करते हैं |
हँसते हँसते अपनी जान भी, वो वतन पर न्यौछावर कर जाया करते हैं |
और आखिरी वक्त में भी वो भारत माता की जय कह जाया करते है |
ये भारतीय जवान है जो मरकर भी अपना नाम अमर कर जाया करते हैं |

Shivani Gupta
Final year

कल तिरंगा

कल तिरंगा फहराया हो, या ना हो,
आज ज़मीन पर पड़ा पाना,
तो माथे से ज़रूर लगाना।

कल राष्ट्रगान गया हो, या ना हो,
आज कानों में पड़ जाये,
तो दो पल ज़रूर ठहर जाना।

कल किसी को आज़ादी की बधाई दी हो, या ना दी हो,
उस आज़ादी को स्वराज्य में बदलने के लिएए
एक कदम ज़रूर बढ़ाना।

कल देशभक्ति के गाने बजाये हो, या ना हो,
आज भारत माता की जय!
का नारा ज़रूर लगाना।

कल भारत की प्रशंसा में कोई भाषण सुना हो, या ना हो,
पर आज चार लोगों के सामने,
भारत की प्रतिभा ज़रूर जताना।

कल सच्चे देशभक्त होने का आडम्बर किया हो, या ना हो,
आज बलिदान भगत सिंह का,

सबको ज़रूर बताना।

कल तिरंगा फहराया हो, या ना हो,
आज ज़मीन पर पड़ा पाना,
तो माथे से ज़रूर लगाना।।

Shraddha Shukla,

TC 2rd Year

आजादी का वर्षगांठ

आओ हम इस आजादी का वर्षगांठ मनाए,
अहिंसा के पथ पर चलते हुए न जाने कितनी है लठ खाई,
जिस आजादी को पाने के लिए हजारों सेनानियों ने कीमत चुकाई,
उस भारतवर्ष को खंडित करते समय कुछ लोगों को शर्म न आई।
आओ हम इस आजादी का वर्षगांठ मनाएं।।

आजादी के बाद हमने कई मुश्किलें हैं झेले
कुछ अपनों से कुछ परायो से बार-बार धोखे हैं मिले|
चाहे वो 1947 65 71 99 का जंग क्यों न हो,
पाकिस्तान जैसे गद्दारों कों हमने भी है सबक सिखाई।
आओ हम इस आजादी का वर्षगांठ मनाए।।

हिंदी चीनी भाई भाई के नारों से,
चाइना के द्वारा 1962 में छल से किया गया वारों से,
चाहे 45000 वर्ग किमी क्षेत्र को गंवाने से या भगवान शिव के कैलाश पर्वत के वंचित हो जाने से,
इस नए भारतवर्ष के मां पार्वती ने भी कितनी है पीड़ा उठाई,
हमने भी अपने रणबांकुरों की अस्मिता से, दुश्मनों को है सबक सिखाई ||
आओ हम इस आजादी का वर्षगांठ मनायें|

इस भारतवर्ष नें खेलों में न जाने कितनी है सफलताएं पाई,
चाहे वह क्रिकेट या ओलंपिक में हॉकी का मैदान क्यों ना हो,
इसी भारतवर्ष की गोद में पलने वाले 'क्रिकेट के भगवान' से
विभूषित सचिन तेंदुलकर और 'हाकी के जादूगर' से विभूषित

मेजर ध्यानचंद जैसे खिलाड़ियों से,
अनगिनत प्रतिस्पर्धाओं में हमने दुनिया को है धूल चटाई ||
आओ हम इस आजादी का वर्षगांठ मनाए|

न्यूक्लियर परीक्षण करके हमने तमाम शक्तिशाली देशों को थर्राया,
और तो और इसरो जैसी संस्थान बनाकर सारे विश्व को है हंडकाया।
मंगल चंद्रयान मिशन से सारे विश्व को है चौंकाया,
अटल जी और कलाम जैसी जोड़ियों ने हर उस असंभव को है संभव बनाया|
आओ हम इस आजादी का वर्षगांठ मनायें||

इस सोनें की चिड़िया को बुरी नजरों से देखने वालों को पैगाम दो,
चिंगारी का खेल बुरा होता हैं।
दूसरों की घरों में आग लगाने का सपना,
अपने ही घरों में खराब होता हैं।
आओं हम दिव्य जलाकर 75 वी आजादी का वर्षगांठ मनाएं।।

जय हिन्द

शुभम सिंह
Branch:Textile Technology
Year - 2nd

मेरे भारत के वीर जवानों

जय प्रकाश भाटिया
(कन्ट्री ऑफ इंडिया)

मेरे भारत के वीर जवानों,
सदा हो जय जय कार तुम्हारी,
कैसा भी हो दुश्मन सामने
रहती मनोहर शान तुम्हारी,
हंस हंस कर देश की सीमा पर
हम सबकी रक्षा करते हो तुम
देश सेवा ही अस्माकंम धर्मम
तीव्र चौकस तुम रहते हरदम,
दुश्मन की क्या मजाल जो बोले
आग की लपटों से वो कैसे खेले
इस देश का बच्चा बच्चा ,
ले नाम आपका यह कहता है,
कठिन समय में भी सैनिक का
मन अरविन्द सा खिला रहता है,
हर सच्चे देश के नागरिक को,
तुमसे है सच्चा प्रेम का बंधन,

जो राखी भेजती देश की बहने
वीरो की खातिर ,देती हैं अपने गहने,
मन करता है इन वीरो के सीने पर,
विजयी स्वर्ण पदक लहरा दूँ,
इन वतन के वीर रखवालों पर
मैं अपना सर्वस्य लुटा दूँ,

स्वतंत्रता दिवस पर लहराता यह तिरंगा

यह मेरे देश की शान है,
यह मेरे देश की आन,
इस तिरंगे पर हम सबको बड़ा गर्व है,
स्वतंत्रता दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व है,
आओ इस महापर्व को मिल कर मनाएं ,
देश की समृद्धि के लिए एक हो जाएँ,
यह संगम गंगा यमुना सरस्वती का
तीनो का सुखद और शांत मिलन
तीनो के मिलन से बना
पावन पुनीत संगम,
तीनो का जल मिल कर एक हो जाता है,
कोई भी अलग अलग इसे पहचान नहीं पाता,
बस एक संगम , एकरस, एक बन जाता है,
जो कोई यहाँ डुबकी लगाता है,
भव सागर तर जाता है,
काश यह तिरंगा भी , हरा सफ़ेद भगवा
अपने तीनो रंगों का ऐसा ही मिलन करदे,
और केवल बस एक भारतीयता के रंग में रंग जाये,
कोई अलग अलग रंग की पहचान न हो,
बस देश केवल प्यार और सौहार्द के रंग में रंग जाये,
जय भारत माता , जय हिन्द, -

-----जय प्रकाश भाटिया,

निर्मल पावन गंगा

भारत माँ के हृदय में बहती निर्मल पावन गंगा,

सर पे जैसे ताज़ सुशोभित,उज्जवल कंचनचंगा,

विंध्याचल और कैलाश सरीखे , जिसके ऊंचे काँधे,

अड़िग हिमालय प्रहरी जैसा,यहाँ दुश्मन कैसे झांके,

पूर्वांचल में बहती ब्रह्मपुत्र , लेकर अमृत की धारा,

दक्षिण में कृष्णा कावेरी, प्रकृति का अनमोल नज़ारा ,

माँ की पवित्र गोद जैसी है ,यहाँ पर कितनी नदियां,

जिनका करें गुणगान यहाँ तो, बीत जाएँगी सदियां,

पाप विनाशक मुक्ति दायिनी ,हरिद्वार'हर कि पौड़ी'

ममता के विशाल सागर की , जननी ‘गौ मुख’ गंगोत्री,

गंगा यमुना सरस्वती मिलन , कितना पवित्र है संगम,

देवों और ऋषियों का कुम्भ में, देखो यहाँ दृश्य विहंगम

पूरब से पश्चिम तक करता, विशाल सागर आलिंगन,

सोने के प्रतिरूप चमकता खेतों में अन्न का कण कण ,

वेद ग्रंथो में अथाह ज्ञान है,निहित इनमें जीवन का सार,

श्रीकृष्ण की गीता ही दर्शाती ,सब जीवन कर्मो का आधार,

हरियाली खेतों में छाये, यहाँ फूलों से उपवन महकाएं,

गौ माता की पूजा करके , अपना जीवन सफल बनायें,

आओ हम सब मिल कर, अपनी धरती को स्वर्ग बनायें,

अब कहीं ना फैलने दे प्रदूषण, घर आँगन में वृक्ष लगाएं,

घर घर हो प्रकाश अलोकिक, मिल शुद्धता के दीप जलाये,

संस्कृति की धरोहर यह धरती यहाँ रह कर पुण्य कमाएँ,

पर्यावरण की रक्षा के हित , नदियों में दूषित जल न बहाएं,

स्वच्छता में ही ईश्वर है, इस सत्य को हम मिलकर अपनाएं ,

जय प्रकाश भाटिया

B. TEXT TT, GCTI
1972 Batch
7814078791.

गीत

आजादी की मर्यादा में, तन–मन खूब उछलता है
घर–घर फहरे आज तिरंगा, ऐसा भाव मचलता है।
अब अखण्ड भारत हो फिर से, ऐसा हम कुछ काम करें
हमसे जितना भाग कट गया, उसको अपने नाम करें
खालिस्तानी नारे लगते, उनको हम नाकाम करें
जो किसान हैं नहीं भला वे, क्यों सबको बदनाम करें
भारत माता के मंदिर में, बगुला भगत न पलता है
घर–घर फहरे आज तिरंगा, ऐसा भाव मचलता है।
रावी की लहरें पुकारतीं, भरती है वे अब आहें
सिन्धू नदी की यादें भी अब, देती हैं हमको राहें
जब तक काम न पूरा कर लें, कैसे हम रूकना चाहें
महासंघ के लिए हमारी, आज फड़कती हैं बाहें
कर्तव्यों की बलिवेदी पर, कोई हाथ न मलता है
घर–घर फहरें आज तिरंगा, ऐसा भाव मचलता है।
क्यों पूरब–पश्चिम में बॉटा, जब बंगाल हमारा है
दोनों को अब एक करेंगे, ऐसा अपना नारा है
लोग भले ही कुछ भी सोचे, लक्ष्य हमारा न्यारा है
कभी न इससे करें किनारा, हमको भारत प्यारा है
दुनिया में सिरमौर हुए हम, कुछ मूल्कों को
घर–घर फहरे आज तिरंगा, ऐसा भाव मचलता है।

मान सरोवर भी अपना है, उसे चीन पर क्यों छोड़े
तिब्बत को आजाद कराकर, भारत से उसको जोड़े
बन्दर घुड़की चीन भले दे, उसका अब हम सिर तोड़े
पहले तो उसको मोड़े फिर, हम उसका भंडा फोड़े
सावधान तो रहना होगा, गिरगिट रंग बदलता है
घर–घर फहरे आज तिरंगा, ऐसा भाव मचलता है।
मनु राठी

दोहे

सीमा पर सेना डटी,   लिए हाथ बंदूक।
दुश्मन के छक्के छुड़ा, भारत अब न चूक।।

नियम उसकी ठीक नहीं, जिस पर किया यकीन।
पहले भी धोखा दिया, बहुरूपिया है   चीन।।

मानवता का दुश्मन यह, तनिक ना आये लाज।
खतरे में ही डाल दी,   इसने दुनिया आज।।

पप सर चढ़ बोल रहा, निश्चित उसका अंत।
ड्रैगन नहीं कंलक है, अंत   करे भगवंत।।

सूरज के तपन से, बनते   भारत बीर।
इनसे जो टकराया तो, घाव लगे गंभीर।।

बासठ का भारत नहीं, ऑख खोल नादान।
अब जो समर हुआ यहॉ, बचे न तेरी जान।।

टी0पी0 सिंह

''हर मन तिरंगा''

हर मन तिरंगा, हर तन तिरंगा।
भारत का, जन   जन तिरंगा।।

अमृत महोत्सव का उमंग।
शहीदों के सपनों के संग।।
हर रंग तिरंगा,
हर प्रण तिरंगा।
देश भक्तों के लहू का,
कण कण तिरंगाा।।

बलिदानियों की यादों की कसम।
राष्ट्र भक्ति ही हमारी परचम।।
राजधर्म तिरंगा,
हरवर्ण तिरंगा।
अस्मिता आजादी का,
रण रण तिरंगा।।
दाण्डी यात्रा के दिन,
अमृत महोत्सव का आगा़ज।

श्रम एवं सम्मान का प्रतीक यह,

आत्म निर्भरता का अमृत है,

हर गीत तिरंगा,

हर प्रीत तिरंगा।

हित देश का,

चित चित तिरंगा।।

सुराज्य के सपनों का,

महोत्सव यह।

सरहद के बीर बाकुड़ों का,

आन–बान–शान है।।

हर ज्ञान तिरंगा,

हर अभिमान तिरंगा।

अनेकता में एकता का,

तीर–कमान तिरंगा।।

टी0पी0 सिंह

''गलवान घाटी से''

आ गया अपने औकात में,।
समझ गया बात ही बात में।।

सूरज स लिया था पंगा।
समझकर जुगनू उस रात में।।

कुछ मेढक टरटराने लगे।
इस बेमौसम बरसात में।।

अक्ल तब ठिकाने आयीहै।
जब चिथड़े मिले प्रतिघात में।।

कुछ गलत फहमी दूर हुई।
उस एक ही मुलाकात में।।

देखो वापस लौट गया वह।
मुँह छुपाय अपने कनात में।।

सच कभी हारता नहीं है।
लाख हो बुरे हालात में।।

टी0पी0 सिंह

''बचपन के याद में''

फिर से नई कहानी दे जा।
अपनी कोई निशानी दे जा।।
धरती प्यासी है रे बदरा।
खेतो को अब पानी दे जा।।
दुश्मन डटा सरहद पर।
अपनी तू जवानी दे जा।।
कथा सुनाये जो परियों की।
वहीं हमारी नानी दे जा।।
खूब सयाना बनकर देखा।
बचपन की नादानी दे जा।।
जो ज़ख्मी कर जाता सबको।
उस पत्थर में पानी दे जा।।
उसके चंचल चितवन संग।
कुछ अदा बचकानी दे जा।।
जो कान्हा संग रास रचावे।
राधा सी दिवानी दे जा।।
बचपन की वेभूली बिसरी।
यादें सभी पूरानी दे जा।।

टी0पी0 सिंह।

आरम्भ से आजादी के अमृत महोत्सव तक शिक्षा नीति

भारत एक समृद्ध सांस्कृतिक, सभ्यता, साहित्य, और शिक्षा सम्पन्न हड़प्पा और मोहनजोदारो व सिंधु घाटी सभ्यता के ४००० साल पुरातन देश है। समाज व सभ्यता के विकास शिक्षा का अभिन्न योगदान है। शिक्षा आवश्यक्ता के अनुकूल परिवर्तन, विकास को सतत सार्थक सहयोग व सर्मपण करने की प्रक्रिया है। भारत देश मे आरम्भ या गुरूकुंल शिक्षा प्रणाली से आजादी के अमृत महोत्सव तक अनवरत आवश्यकता के अनुरूप पुनरीक्षण व प्रख्यापन किये गयें है।

शिक्षा वैदिक युग मे गुरुकुल प्रणाली से आरम्भ हुई थी, जो आवासीय थी जहां शिक्षक या आचार्य का घर विद्यालय होता था। यह प्रणाली बिना औपचारिक लेनदेन द्वारा अनुशासन, कड़ी मेहनत, व्यावहारिक जीवन में उपयोगी व्यवस्था थी, परन्तु गुरुदक्षिणा के रूप मे छात्र शिक्षक के अनुदेशो का आजीवन अनुकरण करते थे ।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्व शब्दो से अकित नही किया जा सकता है आज भी दुनिया को आकर्षित करती है। यह प्रणाली ही शिक्षा का मूल है, समय समय पर पुनरिक्षित कर विभिन्न नामो से प्रचारित, प्रसारित, प्रख्यापित व प्रयोग किया जाता रहा है।

गुरुकुल प्रणाली में अनुकूल प्राकृतिक वातावरण मे खेल, योग, व पर्यटन आदी द्वारा स्वास्थ्य संतुलन, शिल्प, नृत्य, गायन, रण-कौशल, व्यतिव, आत्म-विश्वास, सम्मान, बुद्धि, सोचने की क्षमता, स्वतंत्र स्वभाव का विकास करने का शिक्षण प्रशिक्षण दिया जाता था ।

इस प्रणाली मे शिक्षा समग्र व्यक्तित्व विकास, आध्यात्मिक, प्रकृति और समाज विषयक जागरूकता, पीढ़ियों से ज्ञान और संस्कृति हस्तगत, आत्मसंयम, अनुशासन,

संस्कृति, धर्म, सर्वांगीण विकास व मनोवैज्ञानिक समृध्दि पर आधरित पेशेवर, सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक थी। वेद, पुराण और पवित्र ग्रंथ अनिवार्य मार्गदर्शक व पाठयक्रम थे। गुरुकुल मे कला, साहित्य, शास्त्रों, दर्शन के ज्ञान, व्यावहारिक कौशल मे प्रशिक्षित कर उत्कृष्ट जीवनयापन व कठिनाइयों पर सफलता प्राप्त करने की दीक्षा दी जाती थी ।

प्रौद्योगिकी के आगमन से औपचारिक शिक्षा की दिशा व दशा प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से बदल गयी है। गुरुकुल प्रणाली व्यावहारिक व अवश्यकता के अनुरूप थी जबकी आधुनिक शिक्षा व्यवहारिकता के सापेक्ष उद्येश्य, उपयोग विहीन, समय व संसाधन बरबाद करने वाली है । पाठ्येतर गतिविधियों दिमागी और आध्यात्मिक जागरूकता के संयोजन कर मूल्य-आधारित स्वस्थ प्रतिस्पर्धा से तनावरहित जीवन जीने के गुण विकसित करती थी। छात्र-शिक्षक संबंध संरक्षक से भी प्रगाण होते थे । गुरुकुल प्रणाली आजभी प्रासंगिक है। तथा राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परिक्षाओ मे सफल होने वाले छात्रो मे अनौपचारिक रूप से प्रचलित है। परन्तु ब्रिटिश युग का शैक्षिक इतिहास अधिक प्रचारित प्रसारित है।

अंग्रेज २४ अगस्त, १६०८ को सूरत में भारत में उतरे। फिर १७५७ से १६४७ तक अंग्रेजों के लिए इस विशाल देश पर कब्जा अपना आधिपत्य बनाये रक्खा। परन्तु शिक्षा की दिशा व दशा के सुधार के लिये नियमित, नियन्त्रित, निर्धारित उद्येश्यो के लिये ब्रिटिश संसद चार्टर अधिनियम १८१३ भारत मे ब्रिटिश युग के शैक्षिक इतिहास में एक मील का पत्थर है।

ब्रिटिश संसद चार्टर अधिनियम १८१३ द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी के चार्टर को २० वर्षों के लिए नवीनीकृत किया था जिसे १८१३ के ईस्ट इंडिया कंपनी अधिनियम के रूप में जाना जाता है। इसमे पहली बार ब्रिटिश के भारतीय क्षेत्रों की संवैधानिक

स्थिति को परिभाषित किया। चार्टर अधिनियम, १८१३ की धारा ४३ द्वारा भारत में शिक्षा के अधिकार को विधायी प्रविष्टी दी थी ।

इस खंड मे शैक्षिक नीति के उद्देश्यों को परिभाषित करते हुये साहित्य के सुधार, नागरिकों को शिक्षित, प्रशिक्षित, शिक्षा के प्रचार. प्रसार और भारत में ब्रिटिश ज्ञान व विज्ञान को मिश्रित करना सम्मिलित था।

वर्ष १८२३ सामान्य समिति का गठन शिक्षा के मामलों में कंपनी के मार्गदर्शन करने के मुख्य उद्देश्य से किया गया था। लोक शिक्षण समिति १८२४ तक पारंपरागत शिक्षा के पक्षधर सदस्यों से बनी जिन्होने अंग्रेजी पाठयक्रम व माध्यम मे शिक्षा देने का विरोध किया। तदोपरान्त नए सदस्यों की भर्ती कर समिति की विचारधरा पुनरीक्षित कर दी गयी। परन्तु पुनः वर्ष १८३५ सदस्यों मे विरोध परलक्षित हाने पर शिक्षा का प्रसार १८३५ तक रुक गया।

भारत में शिक्षा विषयक विवाद ब्रिटिश संसद मे लंबे समय से लंबित रहा। अधिकांश पारंपरागत शिक्षा के पक्षधर अंग्रेजी मे शिक्षा पक्षधर थे । कंपनी के प्रशासनिक पदों पर नौकरियां केवल अंग्रेजी पाठयक्रम मे शिक्षित लोगों के लिए आरक्षित थीं। महात्मा गांधी सहित एक समूह भारतीय संस्कृति सहित स्थानीय भाषाओं मे शिक्षा के पक्ष में था। इस विवाद को निस्तारण के लिए कंपनी ने चार्टर अधिनियम को बीस वर्षों में नवीनीकरण का नियम बनाया था।

अंततः चार्टर को १८३३ में बिना प्रत्यक्ष शैक्षणिक खंड के अगले २० वर्षों के लिए विस्तारित किया गया। तत्कालीन बंगाल के गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद तीन सदस्यीय समित में लार्ड मैकाले को कानून संरक्षित का एक सदस्य जोड़ा गया था ।

वुड्स डिस्पैच को भारत में शिक्षा के विकास के अनेक प्रयास मे लार्ड मैकाले के प्रस्ताव भारतीयों को अंग्रेजी में शिक्षित करना सम्मिलित है। अंग्रेजी पाठयक्रम व

माध्यम में शिक्षा के पक्षधरो ने पारंपरिक शिक्षा के सापेक्ष यूरोपीय साहित्य और विज्ञान की श्रेष्ठता को सर्वोपरि माना। जबकि पारंपरागत शिक्षा के पक्षधरो ने इसका विरोध किया और स्थानीय भाषाओं में पढ़ाये जाने के पक्ष मे थे। सभी ने स्थानीय भाषाओं में कोई साहित्यिक या वैज्ञानिक जानकारी उपलब्ध न होने के कारण यूरोपीय साहित्य और विज्ञान के पठन पाठन, परिचय, प्रसार, पश्चिम का विज्ञान भारत के विकास की आवश्यकता का समर्थक किया ।

वर्ष १८५३ तक ब्रिटिश सरकार की प्रमुख योजनाओ में एक भारत सुदृण शिक्षा व्यवस्था भी थी। तत्कालीन राज्य के सचिव, सर चार्ल्स वुड ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के निदेशकों को एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि पूरे देश में अंग्रेजी के साथ-साथ भारतीय स्थानीय भाषाओं में शिक्षा को बढ़ाया और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। चार्ल्स वुड ने अंग्रेजी शिक्षण संस्थान को भारत लिए के लिये उपयोगी माडल के रूप में अपनाने का भी प्रस्ताव दिया था। सन् १८५४ में वुड ने भारत में शिक्षा की एक समन्वित प्रणाली की परिकल्पना की जिम्मेदारी पूर्ण रूप से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया पर हस्तगत कर दी थी। डिस्पैच ने भारत में शिक्षा को नई दिशा दी जिसका आज की शिक्षा मे स्पष्ट प्रभाव पड़ा है।

उक्त की निरन्तरन्तरता मे आजतक शिक्षा नीतियो मे पुनरीक्षिण किये जा रहे है । भारत सरकार ने डा. कस्तूरी रगंन पूर्व अध्यक्ष, इसरो की अध्यक्षता मे गठित कमेटी द्वारा प्रेषित प्रस्ताव को अनुमोदित कर पूर्ववर्ती शिक्षा नीति को पुनरीक्षित कर नई शिक्षा नीति २०२० लागू कर दी है । जिसके महात्वपूर्ण अंश निम्न है ।

1. शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद का ६ प्रतिशत व्यय होगा जो वर्तमान मे १.७ प्रतिशत है ।
2. युवा और वयस्क शत-प्रतिशत साक्षर किये होगे ।
3. शिक्षकों के साथ-साथ अभिभावकों को भी शिक्षा के प्रति जागरूक होगे ।

4. बौद्धिक, सामाजिक, शारीरिक, भावनात्मक और नैतिक सभी क्षमताओं को एकीकृत तौर पर बढ़ाया जायेगा ।
5. नैतिकता व संवैधानिक मूल्य पाठ्यक्रम का प्रमुख हिस्सा होंगी।
6. वैचारिक समझ के साथ रचनात्मकता और महत्वपूर्ण सोच को बढ़ाया जायेगा ।
7. छात्रो की ३, ५ और ८ ग्रेड में उपयुक्त प्राधिकारी द्वारा स्कूल परीक्षा आयोजित होगी।
8. १०वीं और १२वीं की बोर्ड परीक्षा का स्वरूप समग्र विकास के उद्देश्य से पुनरीक्षण होगा।
9. PARAKH (Performance assessment/प्रदर्शन मूल्यांकन, Review/समीक्षा and और Holistic Knowledge Development Analysis समग्र ज्ञान के विकास का विश्लेषण) के लिये नया राष्ट्रीय मूल्यांकन मंच होगा ।
10. कक्षा ६ के पठन-पाठन से गणितीय और वैज्ञानिक सोच आरम्भ होगी ।
11. ६वीं कक्षा से इंटर्नशिप के साथ व्यावसायिक शिक्षा का शिक्षण व प्रशिक्षण होगा ।
12. १०+२ के ढांचे को पुनरीक्षण कर ५+३+३+४ होगा ।
13. नई व्यवस्था में १२ साल की स्कूली शिक्षा और ३ साल की प्री-स्कूल आंगनवाड़ी होगी।
14. कक्षाओ मे प्रवेश के लिये राष्ट्रीय स्तर की एक सामान्य प्रवेश परीक्षा संचालित होगी ।

15. ५वीं कक्षा तक की शिक्षा का माध्यम स्थानीय भाषा, क्षेत्रीय भाषा व मातृभाषा मे प्राथमिकता पर आधारित होगा।

16. स्कूल और उच्च शिक्षा मे संस्कृत सभी स्तरों पर एक विकल्प के रूप में शामिल किया होगा। जिसमें तीन भाषा सूत्र शामिल हैं।

17. एक विकल्प के रूप में भारत का साहित्य और अन्य भारतीय भाषाएँ भी उपलब्ध होंगी।

18. छात्र भाषा के लिए बाध्य नहीं होगा।

19. उच्च शिक्षा को विषयों में लचीलापन होगा।

20. कला और विज्ञान छात्रों के बीच समानता होगी।

21. पाठ्यपुस्तक पर निर्भरता के सापेक्ष ई-लर्निंग पर अधिक ध्यान केंद्रित होगा ।

22. उच्च शिक्षा के लिए उपयुक्त प्रमाणन के साथ कई प्रवेश और निकास बिंदु होंगे।

23. स्नातक स्तरीय पाठयक्रम ३ या ४ साल का होगा तथा अध्ययन काल मे उपयुक्त प्रमाणीकरण के साथ कई निकास विकल्पों जैसे प्रमाणपत्र १ साल के बाद, २ साल के बाद एडवांस डिप्लोमा, ३ साल के बाद डिग्री और ४ साल के बाद रिसर्च डिग्री के साथ स्नातक उपाधी प्राप्त होगी।

24. एकेडमिक बैंक आफ क्रेडिट (एबीसी) बनाया जाएगा जिसमें छात्रों द्वारा अर्जित अकादमिक क्रेडिट विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थान के माध्यम से डिजिटल रूप से संग्रहीत व स्थानांतरित किया होगा अंतिम डिग्री के लिए आगणन होगे।

25. संस्थानों को दूरस्थ व आनलाइन कार्यक्रम चलाने का विकल्प होगा।

26. *पाठ्यक्रम को विषयों की मूल अनिवार्यता तक सीमित कर दिया गया है। उनका शिक्षण गम्भीर सकारात्मक चिन्तन, खोज, चर्चा, परिर्चचा पर आधारित होगी।*

27. *उच्च शिक्षा के लिए नियामक सरल व पालन कठोर होगा।*

28. *२०३० तक प्रत्येक जनपद में कम से कम एक बहु-विषयक उच्च शिक्षा संस्थान होगा।*

29. *२०४० के अंत तक सभी उच्च शिक्षा संस्थान को बहु-विषयक संस्थान जिसमे ३००० या अधिक छात्रो की प्रवेश क्षमता होगी।*

30. *अगले १५ सालो में उच्च शिक्षा संस्थानो की संम्बध्ता समाप्त कर स्वयत्तशासी स्वरूप मे विकसित होगे।*

31. *उच्च शिक्षा के सभी तरह के डीम्ड और संबंधित विश्वविद्यालय विश्वविद्यालय ही होगे।*

डा. लोकेश शुक्ला,
राजकीय केन्द्रीय वस्त्र संस्थान, कानपुर
drshukl.kanpur@gmail.com
मोबाइलः- ०७५०५३३०६६६

बलिदान

आजादी का ऐसा ७५ वां अमृत महोत्सव पर्व मनाने को
याद करतें हैं इसके पीछे के बलिदानों को।
परतंत्रता की बेड़ियों से इस देश को मुक्त कराने को
कोई लाठी लेकर ;महात्मा गांधी, कोई स्वयं को गोली मारकर चन्द्र शेखर आजाद।
कोई फांसी के फंदे पर यूं ही झूल जाने को ; गत सिंह राजगुरु सुखदेव
याद करते हैं इसके पीछे के बलिदानों को।
कोई वेश बदलकरए आजाद.हिन्द बनाने को ; सुभाषचंद्र बोस
कोई बच्चा कमर बांधकर दौड़ पड़ा लड़ जाने को ;महारानी लक्ष्मीबाई ।
आज इस महान पर्व पर ऐसे झंडा फहराने को
हम हमेशा तैयार हैं इन शहीदों के सामने सर झुकाने को।
आइए याद करते हैं इसके पीछे के बलिदानों को।
जय हिन्द
जय भारत !!
अंकिता पटेल

स्वतंत्रता दिवस

स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस में झंडा फहराने में क्या अंतर है ?

पहला अंतर

15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर झंडे को नीचे से रस्सी द्वारा खींच कर ऊपर ले जाया जाता है, फिर खोल कर फहराया जाता है, जिसे *ध्वजारोहण कहा जाता है क्योंकि यह 15 अगस्त 1947 की ऐतिहासिक घटना को सम्मान देने हेतु किया जाता है जब प्रधानमंत्री जी ने ऐसा किया था। संविधान में इसे अंग्रेजी में Flag Hoisting (ध्वजारोहण) कहा जाता है।

जबकि

26 जनवरी गणतंत्र दिवस के अवसर पर झंडा ऊपर ही बंधा रहता है, जिसे खोल कर फहराया जाता है, संविधान में इसे Flag Unfurling (झंडा फहराना) कहा जाता है।

दूसरा अंतर

15 अगस्त के दिन प्रधानमंत्री जो कि केंद्र सरकार के प्रमुख होते हैं वो ध्वजारोहण करते हैं, क्योंकि स्वतंत्रता के दिन भारत का संविधान लागू नहीं हुआ था और राष्ट्रपति जो कि राष्ट्र के संवैधानिक प्रमुख होते है, उन्होंने पदभार ग्रहण नहीं किया था। इस दिन शाम को राष्ट्रपति अपना सन्देश राष्ट्र के नाम देते हैं।

जबकि
26 जनवरी जो कि देश में संविधान लागू होने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, इस दिन संवैधानिक प्रमुख राष्ट्रपति झंडा फहराते हैं

तीसरा अंतर

स्वतंत्रता दिवस के दिन लाल किले से ध्वजारोहण किया जाता है।

जबकि

गणतंत्र दिवस के दिन राजपथ पर झंडा फहराया जाता है
Seema Shukla

जय जय शूरवीरो

जय जय शूरवीरो, हिन्द जवानों,
तुमको सत् बार नमन।
रक्तार्पण करके, ज्वाला भरके,
शुरू हुआ महा हवन।।

एक बाज कायर, सहस्त्र योजन,
से षड्यंत्र पाले था।
श्री राम नाम की, सोन चिरैया,
पर कुदृष्टि डाले था।।

संतावन कि अग्नि, जग जग धधकी,
मांग रही थी आहुति।
वीरो की टोली, जमके बोली,
एक हुई सब जाती।।

धनसिंह लिए प्रण, छेड़ दिया रण,
रची युद्ध की दास्ता।
भीड़ हजारों की, बल शेरों की,
खूब लड़ी स्वधीनता।।

अनीति का घर्षण, धार्मिक शोषण,
पर जागा हिन्दुस्तां।
गोरों पर बरसे, निकले घर से,
एक हुआ हिन्दुस्तां।

मेरठ से मंगल, छोड़े जंगल,
तब शुरू हुआ विद्रोह।
व्रत तोड़ शांति का, बिगुल क्रांति का,
जो होगा अब रण हो।

दिल्ली में जीते, हिंद के चीते,
थर थर काँपे गोरे।
सम्पूर्ण राष्ट्र में, सभी प्रांत में,
बिलायती को घेरे।

जब सूरज डूबा, उठे पेशवा,
गोरों की नस फारी।
कानपुर से नाना, सबने जाना,
पड़े अदू पर भारी।।

अस्सी की उम्र में, इक इक क्रम में,
लगे शत्रु पछाड़ने।
बाबू कुँवर सिंह, नाना के सॅंग,
चले अवध निवारने।।

दाया हथ फेंका, ना सिर टेंका,
लगी भुजा जब गोली।
जगदीशपुर भूमि, माटी चूमी,
उखाड़ फेंकी टोली।।

लाहौर पंजाब, मुरादाबाद,
देहरादून काशी।

लखनऊ कानपुर, और नागपुर,
चली क्रांति अब झांसी।।

बरेली आगरा, दिल्ली ढाका,
मराठा राजस्थान।
लाहौर पंजाब, के शोलों से,
हिल गया इंग्लिशतान।।

अँगार हुआ तेज, उचटे अँग्रेज,
जब कूद पड़ी नारी।
बहु लड़ी अनवरत, बेगम हजरत,
पड़ी शत्रु पर भारी।।

धग ज्वाला धधकी, रानी भड़की,
जब झांसी की ठानी
घबराय ब्रितानी, वो मर्दानी,
गर्दन पर असि तानी।।

हुआ लहू लुहान, भू बिछे प्राण,
लक्ष्मी बनी भवानी।
सॅंग आये तात्या, बनके साया,
जंग चली तूफानी।।

एक आग सुलगी, हर ओर जली,
खाक हुए कितने घर।
आजादी पाने, की चाहत में,
कलम हुए कितने सर।।

ढलने लगा सूर्य, बल हुआ चूर,
अपनो का था कुसूर।
आया नहीं सॅंग, हर एक अंग,
रह गया स्वप्न अपूर।।

मिलकर कंधों से, चलते गर हम,
खौफ़ नहीं अंधों से।
स्व देश के भीतर, रहते तीतर,
हारे जयचंदो से।।

संतावन कि अग्नि, बुझी नहीं थी,
जली रही चिंगारी।
जो नब्बे वर्षो, जली रही सो,
दिला गयी आजादी।।

क्रांतिकारी अमर, है प्रथम समर,
के करते उन्हें नमन।
करे पुष्प अर्पित, शीस समर्पित,
लोचन है सबके नम।।

जय जय शुरवीरो, हिन्द जवानों,
तुमको सत् बार नमन।
मातृ भारती के, वीर सपूतों,
तुमको सत् बार नमन।।

-©शिखर राज गुप्ता
UPTTI Batch 2016-20
कार्यरत - रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमटेड
मो॰ 9140348146

निर्मल पावन गंगा

भारत माँ के हृदय में बहती निर्मल पावन गंगा,
सर पे जैसे ताज़ सुशोभित,उज्जवल कंचनचंगा,
विंध्याचल और कैलाश सरीखे , जिसके ऊंचे काँधे,
अड़िग हिमालय प्रहरी जैसा,यहाँ दुश्मन कैसे झांके,
पूर्वांचल में बहती ब्रह्मपुत्र , लेकर अमृत की धारा,
दक्षिण में कृष्णा कावेरी, प्रकृति का अनमोल नज़ारा ,
माँ की पवित्र गोद जैसी है ,यहाँ पर कितनी नदियां,
जिनका करें गुणगान यहाँ तो, बीत जाएँगी सदियां,
पाप विनाशक मुक्ति दायिनी ,हरिद्वार'हर कि पौड़ी'
ममता के विशाल सागर की , जननी 'गौ मुख' गंगोत्री,
गंगा यमुना सरस्वती मिलन , कितना पवित्र है संगम,
देवों और ऋषियों का कुम्भ में, देखो यहाँ दृश्य विहंगम
पूरब से पश्चिम तक करता, विशाल सागर आलिंगन,
सोने के प्रतिरूप चमकता खेतों में अन्न का कण कण ,
वेद ग्रंथो में अथाह ज्ञान है,निहित इनमें जीवन का सार,
श्रीकृष्ण की गीता ही दर्शाती ,सब जीवन कर्मो का आधार,
हरियाली खेतों में छाये, यहाँ फूलों से उपवन महकाएं,
गौ माता की पूजा करके , अपना जीवन सफल बनायें,
आओ हम सब मिल कर, अपनी धरती को स्वर्ग बनायें,
अब कहीं ना फैलने दे प्रदूषण, घर आँगन में वृक्ष लगाएं,
घर घर हो प्रकाश अलोकिक, मिल शुद्धता के दीप जलाये,
संस्कृति की धरोहर यह धरती यहाँ रह कर पुण्य कमाएँ,
पर्यावरण की रक्षा के हित , नदियों में दूषित जल न बहाएं,
स्वच्छता में ही ईश्वर है, इस सत्य को हम मिलकर अपनाएं ,

..जय प्रकाश भाटिया

स्वतंत्रता दिवस पर लहराता यह तिरंगा

यह मेरे देश की शान है,
यह मेरे देश की आन,
इस तिरंगे पर हम सबको बड़ा गर्व है,
स्वतंत्रता दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व है,
आओ इस महापर्व को मिल कर मनाएं ,
देश की संऋद्धि के लिए एक हो जाएँ,
यह संगम
गंगा यमुना सरस्वती का
तीनो का सुखद और शांत मिलन
तीनो के मिलन से बना
पावन पुनीत संगम,
तीनो का जल मिल कर एक हो जाता है,
कोई भी अलग अलग इसे पहचान नहीं पाता,
बस एक संगम , एकरस, एक बन जाता है,
जो कोई यहाँ डुबकी लगाता है,
भव सागर तर जाता है,
काश यह तिरंगा भी , हरा सफ़ेद भगवा
अपने तीनो रंगों का ऐसा ही मिलन करदे,
और केवल
बस एक भारतीयता के रंग में रंग जाये,
कोई अलग अलग रंग की पहचान न हो,
बस देश केवल प्यार और सौहार्द के रंग में रंग जाये,
जय भारत माता , जय हिन्द, -
-----जय प्रकाश भाटिया,

मेरे भारत के वीर जवानो,
सदा हो जय जय कार तुम्हारी,
कैसा भी हो दुश्मन सामने
रहती मनोहर शान तुम्हारी,
हंस हंस कर देश की सीमा पर
हम सबकी रक्षा करते हो तुम
देश सेवा ही अस्माकंम धर्मम
तीव्र चौकस तुम रहते हरदम,
दुश्मन की क्या मज़ाल जो बोले
आग की लपटों से वो कैसे खेले
इस देश का बच्चा बच्चा ,
ले नाम आपका यह कहता है,
कठिन समय में भी सैनिक का
मन अरविन्द सा खिला रहता है,
हर सच्चे देश के नागरिक को,
तुमसे है सच्चा प्रेम का बंधन,
जो राखी भेजती देश की बहने
वीरो की खातिर ,देती हैं अपने गहने,
मन करता है इन वीरो के सीने पर,
विजयी स्वर्ण पदक लहरा दूँ,
इन वतन के वीर रखवालों पर
मैं अपना सर्वस्य लुटा दूँ,
---जय प्रकाश भाटिया

लहरा वो झंडा

जिसपे यूँ मर मिटे लहरा वो झंडा

हर गली घर में है लोहे का बंदा

जिसपे यूँ मर मिटे लहरा वो झंडा

हर गली घर में है लोहे का बंदा

झंडा लोहा लाठी टूटी

चीता योद्धा धुंआ शोले

उजले शोले ओ जलते शोले

जिगरा शोले दिल पे है शोले

हाँ जले जले शोले बेचैन शोले

धरती हिला दे ये हर सीमा तोड़े हे

जिसपे यूँ मर मिटे लहरा वो झंडा

हर गली घर में है लोहे का बंदा

आजा आजा हमदम एक हम बने

दिल में ख़ुशी गूंजी है धड़कने

झुके नहीं कभी भी ये पलटने

अरे सुबह होई तोड़ी सभी बंदिशें

अपने तो मन में अब भड़के है शोला

दम है किसी को आ कर मुकाबला

लोहा ज्वाला गोला भाला

जाता बेटा बोलो शोले

करमठ शोले कोलकाता शोले

उज्वल शोले गुजराती शोले

क्रांति है शोले चित्तूर शोले

तीर सा तेज़ जो तीरनल वेली शोले हे

जिसपे यूँ मर मिटे लहरा वो झंडा

हर गली घर में है लोहे का बंदा

छूटे नहीं मिलकर ये हाथ रे

सर पे कफ़न बंधा है जाट ने

जब भी बिगुल बाजेगा जीत का

मन नाच उठेगा और दिल झूमेगा

छूटा रे अँधेरा खुदपे रख तू भरोसा

साथ हमेशा मिले दिल को दिलासा

आजा राजा बाजा चीता

जाता ज्वाला ऊंचे शोले

प्रबल ये शोले पंजाबी शोले

थके ना ये शोले अधूरी शोले

पावन शोले अल्लाह सी शोले

विजयवार है वीर मराठा शोले हे

जिसपे यूँ मर मिटे लहरा वो झंडा

हर गली घर में है लोहे का बंदा

जिसपे यूँ मर मिटे लहरा वो झंडा

हर गली घर में है लोहे का बंदा.

Astitva Tiwaree

तुझे ओ मेरे देश

मैं तज कर जा नहीं सकता तुझे ओ देश मेरे,
बुलाएं लाख ललचाएं मुझे परदेश डेरे,
इसी पावन धरा पर हो मगन संतुष्ट हूॅ मैं,
लुभा सकते नहीं धन धान्य महलों बसेरे।

जुड़ा हूॅ मैं अमिट इतिहास से कैसे भुला दूं?
जो जागृत प्रीत की झंकारवह कैसे सुला दूं?
जो घुट्टी संग भारत वर्ष की ममता मिली थी,
उसे कैसे भुला कर आज मॉ तुझसे विदा लूं?

मैं तेरे संग वैसाखी कि गर्मी में तपूंगा,
मगन हो आंधियों लू के थपेड़ों को सहूंगा,
सहस्रों वर्ष से जो मेघ भादों में बरसते,
तिलक हर वर्ष उन पावस कि बूंदों से करूंगा।

मगन मन मस्त लेकर घूम आऊंगा अकेले,
उमड़ती भीड़में मिल कुम्भ और पुष्कर के मेले,
कठिन हो पंथ पर हो शीश पर आशीष तेरा,
उसे पा झेल जाऊंगा सभी जग के झमेले।

कभी फिर रात्रि को छत पर निरख कर चांद तारे,

सहज ही गुनगुनाऊंगा मधुर वे गीत प्यारे,

लिखे हैं अमिट स्याही से हृदय पर आत्मा पर,

सुने शिशुकाल में या पूर्व जन्मों में हमारे।

संजीव कुमार राजपूत

<u>अमृत काल में मानव जीवन में आध्यात्म</u>

अच्छे मानव जीवन हेतु निम्न पहलू अत्यंत अवश्यक हैं।

1. प्रेम-मोह:

जहाँ प्रेम है, वह स्थान आश्रम है। जहाँ मोह है, वह स्थान गृहस्थ है ...

प्रेम, बेहद में है। मोह, हद में है ...

प्रेम का धागा बहुत लम्बा होता है, बेहद में होता है। मोह में कोई धागा नहीं होता, मोह आत्मा को हद में ले आता है, मोह आत्मा को बांध देता है ...

प्रेम वाला जो है, वो धीरज से हर काम करता है। मोह वाला जो है, वो जल्दबाज़ी करता है, अस्त-व्यस्त रहता है ...

प्रेम जो है, वो deep rooted problems को ही खत्म कर देता है। मोह जो है, वो ऊपर-ऊपर की चीज़ को ठीक करने की कोशिश करता है ...

प्रेम निःस्वार्थ होता है। मोह में स्वार्थ छिपा होता है ... प्रेम, निडर होता है। मोह में डर छिपा होता है ...

2. जहाँ शांति है वही सुख:

यदि हमारे पास दुनिया का पूरा वैभव और सुख-साधन उपलब्ध है परंतु शांति नहीं है तो हम भी आम आदमी की तरह ही हैं। संसार में मनुष्यों द्वारा जितने भी कार्य अथवा उद्यम किए जा रहे हैं सबका एक ही उद्देश्य है 'शांति'। सबसे पहले तो हमें ये जान लेना चाहिए कि शांति क्या है? शांति का केवल अर्थ यह नहीं कि **केवल मुख से चुप रहें अपितु मन का चुप रहना ही सच्ची सुख-शांति का आधार है।** कहते हैं कि जहाँ शांति है वहाँ सुख है। अर्थात सुख का शांति से गहरा नाता है। लड़ाई, दुख और लालच को भंग करने के लिए शांति सशक्त औजार है। कई लोग कहते हैं कि बिना इसके शांति नहीं हो सकती। इसके साथ ही भौतिक सुख-साधनों तथा अन्य संसाधनों से शांति होगी यह कहना भी गलत है। यदि इससे ही शांति हो जाती तो हम मंदिर आदि के चक्कर नहीं लगाते।

धन-दौलत और संपदा से संसाधन खरीदे जा सकते हैं परंतु शांति नहीं। हम यही सोचते रह जाते हैं कि यह कर लूँगा तो शांति मिल जाएगी। आवश्यकताओं को पूरा करते-करते पूरा समय निकल जाता है और न तो शांति मिलती है और न ही

खुशी। खुशहाल पारिवारिक जीवन के लिए जरूरी है कि पहले शांति रहे। जहाँ शांति है वहाँ विकास है। जहाँ विकास है वहाँ सुख है।

इसलिए अमूल्य शांति के लिए सबसे पहले हमें अपने आप को देखना होगा। **अपने बारे में जानना होगा। मैं कौन हूं, कहाँ से आया हूं** और हमारे अंदर कौन-कौन सी शक्तियाँ हैं जो हम अपने अंदर ही प्राप्त कर सकते हैं। शांति का सागर परमात्मा है। हम आत्माएँ परमात्मा की संतान हैं। जब हमारे अंदर शांति आएगी तो हमारा विकास होगा।जब विकास होगा तो वहाँ सुख का साम्राज्य होगा। यह प्रक्रिया बिल्कुल सरल और सहज है जिसके जरिए हम यह जान और पहचान सकते हैं। वर्तमान समय अशांति और दुख के भयानक दौर से गुजर रहा है। ऐसे में जरूरत है कि हम अपने धर्म और शाश्वत सत्य को स्वीकारते हुए शांति के सागर परमात्मा से अपने तार जोड़ें। ताकि हमारे भीतर शांति का खजाना मिले। इससे हमारे अंदर शांति तो आएगी ही साथ ही हम दूसरों को भी शांति प्रदान कर सकेंगे।

3. शांत मन आत्मा की ताकत है:

जब पानी उबलता है तो हम उसमें अपना प्रतिबिम्ब नहीं देख सकते हैं और शांत पानी में हम खुद को देख सकते हैं। ठीक वैसे ही अगर हमारा हृदय शांत रहेगा तो हमारी आत्मा के वास्तविक स्वरूप को हम देख सकेंगे।

एक विचार आदमी के संसार को बदल देता है। यदि वह विचार शुभ है तो वह ना केवल स्वयं की प्रगति का कारण बनता है अपितु दूसरे लोगों के जीवन को भी बदलने तक की सामर्थ्य रखने वाला होता है।

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग। चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग। ख़ामोशी की तह में छुपा लें सारी उलझने, शोर कभी मुसीबते हल नहीं करते

अचेतन मन में ना जाने कितनी इच्छाएं, कितने प्रदूषित विचार कितनी ईर्ष्याऐं, अंदर ही अंदर चेतना को बोझिल और प्रदूषित एवं परेशान करती रहती हैं। जब हम अपने अन्दर जमा इस कूड़े-कचरे को बाहर निकालकर अपनी चेतना को हल्का और निर्मल कर लेते हैं तो समस्या का हल मिल जाता है

4. स्वयं को जानना जरूरी:

संसार का अर्थ है कि दूसरे जान लें कि मैं कौन हूँ। और ध्यान का अर्थ है कि मैं स्वयं जान लूं कि मैं कौन हूँ। 'मुस्कान' मानव हृदय की मधुरता को दर्शाता है और 'शांति' बुद्धि की परिपक्कता को.. और दोनों का ही होना "मनुष्य की संपूर्णता" को बताता है। इसलिए "मुस्कुराते हुए शांति के साथ परिपूर्ण जीवन जीने का आनंद लें "

5. जीवन का कर्म योग:

जिसमें कर्म तो होता है मगर कर्तापन का भाव नहीं होता है! जहाँ कर्तापन का भाव नहीं, तो वहाँ तनाव, विषाद कैसा ? आनन्द साधन से नहीं साधना से प्राप्त होता है। आंनद भीतर का विषय है, तृप्ति आत्मा का विषय है। मन को तो कितना भी मिल जाए, यह अपूर्णता का बार-बार अनुभव कराता रहेगा। जो अपने भीतर तृप्त हो गया उसे बाहर के अभाव कभी परेशान नहीं करते। जीवन तो बड़ा आनंदमय है लेकिन हम अपनी इच्छाओं के कारण के कारण इसे कष्टप्रद और क्लेशमय बनाते हैं। प्रारब्ध में जितना लिखा है और जब मिलना लिखा है, उतना ही मिलेगा और उसी समय पर मिलेगा। कर्म जरूर करते रहें, पर चिन्तित कदापि ना हों। जीवन के लिए जो

जरुरी है उतना प्रकृति कारण से नहीं, करुणा से अपने आप दे देती है। आत्म निरीक्षण साधना का प्रथम सोपान हैमनसा-वाचा, कर्मणा एकत्व और स्वयं के प्रति जागरूक रहे।

अरूण कुमार सिंह गंगवार,
एसोसिएट प्रोफेसर, उत्तर प्रदेश वस्त्र प्रोदौगिकी संस्थान, कानपुर।